इकाई 6: लोकवार्ता की अवधारणा एवं स्वरूप (लोकसंस्कृति के सन्दर्भ में)

इकाई की रूपरेखा:

6.1 उद्देश्य
6.2 प्रस्तावना
6.3 लोकवार्ता का स्वरूप, क्षेत्र और महत्त्व
6.4 लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतःसंबंध
6.5 लोकवार्ता और लोक साहित्य
6.6 लोकवार्ता के तत्व
6.7 लोक साहित्य और संस्कृति
6.8 सारांश
6.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
6.10 अधिक जानने के लिए पढ़े
6.11 अभ्यास-प्रश्न

6.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन से अध्येता—

- लोकवार्ता के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- लोकवार्ता की संकल्पना, स्वरूप एवं उसके व्यापक क्षेत्र को समझ सकेंगे।
- लोकजीवन में लोकवार्ता के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्त्व को जान पाएँगे।
- लोकवार्ता एवं लोक साहित्य के अंतर्सम्बन्ध का विश्लेषण कर पाएँगे ।
- लोक साहित्य को लोकवार्ता के अभिन्न अंग के रूप में पहचान पाएँगे ।
- लोकवार्ता के प्रमुख तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- लोकवार्ता की संरचना और उसके घटकों को जानेंगे ।

6.2 प्रस्तावना:

भारतीय ज्ञान-परम्परा में 'लोक' शब्द केवल ग्रामीण या अशिक्षित समाज का पर्याय नहीं है, बल्कि वह जनजीवन की समष्टिगत चेतना, अनुभव और सांस्कृतिक स्मृति

का प्रतीक है। लोक अपने व्यवहार, विश्वास, रीति-रिवाज, उत्सव, भाषा, कला और साहित्य के माध्यम से जिस जीवन-दृष्टि को अभिव्यक्त करता है, उसी का समन्वित अध्ययन 'लोकवार्ता' के अंतर्गत किया जाता है। अंग्रेज़ी के Folklore शब्द के लिए हिन्दी में 'लोकवार्ता' का प्रयोग हुआ है, परन्तु इसका आशय केवल कथाओं या किंवदन्तियों तक सीमित नहीं हैबल्कियह लोकजीवन के समग्र ज्ञान, अनुभव और सांस्कृतिक विरासत का व्यापक द्योतक है।

लोकवार्ता उस जीवंत परम्परा का नाम है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से संचित होती हुई वर्तमान तक पहुँचती है। इसमें लोकविश्वास, आचार-विचार, उत्सव-त्योहार, व्रत-अनुष्ठान, लोकगीत, लोककथाएँ,लोकगाथाएँ, लोकनृत्य, लोकनाट्य, कहावतें, पहेलियाँ और यहाँ तक कि जादू-टोना एवं लोकमान्यताएँ भी सम्मिलित होती हैं।लोकवार्ता किसी समाज की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक संरचना का दर्पण है। यह केवल साहित्यिक सामग्री नहीं, बल्कि लोकजीवन का व्यवहारिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दस्तावेज है।लोक साहित्यलोकवार्ता का महत्वपूर्ण अंग है। शिष्ट साहित्य और लोक साहित्ययये साहित्य की दो प्रमुख धाराएँ मानी जाती हैं, परन्तु दोनों के बीच कोई कठोर विभाजन रेखा नहीं है।लोक साहित्य की सहजता, स्वाभाविकता और जीवन-सान्निध्य ने शिष्ट साहित्य को निरंतर प्रेरित और समृद्ध किया है। लोकजीवन की अनुभूतियाँ, उसकी भाषा, उसके प्रतीक और उसकी भावभूमि शिष्ट साहित्य में बार-बार रूपांतरित होकर प्रकट होती रही है। इस दृष्टि से लोक साहित्य को परिनिष्ठित साहित्य की आधारभूमि कहना अतिशयोक्ति नहीं है।लोकवार्ता और लोकसंस्कृति का संबंध भी अत्यंत घनिष्ठ है। संस्कृति किसी समाज विशेष के सामूहिक संस्कारों, मूल्यों और जीवन-पद्धति की अभिव्यक्ति है। जब 'संस्कृति' शब्द के साथ 'लोक' जुड़ता है, तब उसका आशय उस जनसमुदाय से होता है जो कृत्रिमता से दूर, परम्परागत अनुभवों और सामाजिक सह-अस्तित्व के आधार पर अपना जीवन गढ़ता है। लोकसंस्कृति में धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, कला, रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवहार सभीएक-दूसरे से अंतःसम्बद्ध रूप में उपस्थित रहते हैं।

लोकजीवन में संस्कृति केवल बाहरी आडम्बर या भौतिक सम्पन्नता का नाम नहीं है, बल्कि वह विनय, त्याग, धैर्य, सत्य, शुचिता और सामुदायिक भावना जैसे मूल्यों पर आधारित होती है। लोकपरम्पराएँ इन्हीं मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और संप्रेषित करती हैं। इसलिए लोकवार्ता को समझना वस्तुतः लोकसमाज की आत्मा, उसकी ऐतिहासिक स्मृति और उसकी सांस्कृतिक पहचान को समझना है।प्रस्तुत अध्याय में लोकवार्ता के स्वरूप, उसके तत्वों, लोक साहित्य से उसके संबंध तथा लोकसंस्कृति के साथ उसके अंतःसम्बन्ध का विस्तृत विवेचन किया जाएगा, ताकि लोकजीवन की इस व्यापक और बहुआयामी परम्परा को समग्रता में समझा जा सके।

6.3 लोकवार्ता का स्वरूप, क्षेत्र और महत्त्व:

'लोक-वार्ता'के लिए अंग्रेज़ी में Folklore शब्द का प्रयोग किया जाता है।लोकवार्ता मूलतः लोकजीवन से जुड़े ज्ञान, अनुभव और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का व्यापक अध्ययन-क्षेत्र है। इस विषय के प्रमुख विद्वान डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकवार्ता को एक जीवंत और गतिशील शास्त्र माना है। उनके अनुसार लोक का जीवन जितना व्यापक और बहुआयामी है, लोकवार्ता का क्षेत्र भी उतना ही विस्तृत है। लोक में रहने वाले लोगों का जीवन, उनकी भूमि और भौतिक परिस्थितियाँ तथा उनकी संस्कृतिये तीनों मिलकर लोक-ज्ञान की संपूर्णता को व्यक्त करते हैं, और लोकवार्ता का अध्ययन इन्हीं सभी आयामों से जुड़ा रहता है।वास्तव में लोकवार्ता का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है। इसमें लोकजीवन के व्यवहार, लोकसंस्कृति की परम्पराएँ, लोकभाषा की अभिव्यक्तियाँ, लोक साहित्य की विधाएँ तथा प्रकृति और समाज से जुड़े लोक-अनुभव सभी सम्मिलित होते हैं।लोकवार्ता लोकसमाज की जीवन-पद्धति, विश्वासों और सांस्कृतिक चेतना का समग्र चित्र प्रस्तुत करती है।

डॉ. सत्येन्द्र ने लोकवार्ता के अध्ययन को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया है- लोकविश्वास और आचरण, रीति-रिवाजतथा लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, गीत और कहावतें आदि। इसी प्रकार डॉ. श्याम परमार ने लोकवार्ता के अंतर्गत लोकगीत, लोकगाथाएँ, कहावतें और पहेलियाँ; पूजा-अनुष्ठान और व्रत; जादू-टोना और भूत-प्रेत से संबंधित विश्वास; लोकनृत्य और लोकनाट्य; तथा बच्चों और ग्रामीण समाज के खेलों को सम्मिलित किया है। इन वर्गीकरणों से स्पष्ट होता है कि लोकवार्ता केवल साहित्यिक सामग्री तक सीमित नहीं है, बल्कि लोकजीवन की संपूर्ण सांस्कृतिक संरचना को अपने भीतर समेटे हुए हैं।

लोक साहित्य, लोकवार्ता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। साहित्य की दो प्रमुख धाराएँ 'शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य' मानी जाती हैं। प्राचीनता, विस्तार और सांस्कृतिक महत्त्व की दृष्टि से लोक साहित्य को शिष्ट साहित्य से कम नहीं आँका जा सकता। बल्कि मौखिक परम्परा के कारण लोक साहित्य का उद्भव लिखित साहित्य से भी पहले माना जाता है। इसने न केवल लोकजीवन के अनुभवों को सुरक्षित रखा, बल्कि समय-समय पर शिष्ट साहित्य को भी प्रेरित और प्रभावित किया है।लोक साहित्य को परिनिष्ठित साहित्य की आधारशिला कहा जाता है।लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य और लोक-सुभाषित जैसी लोकविधाओं में व्यक्त विषयवस्तु को देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि लोक साहित्य लोकजीवन और लोकसंस्कृति का दर्पण तथा एक प्रामाणिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसमें लोक के व्यक्तिगत अनुभवों से लेकर सामाजिक जीवन-व्यवहार तक की अभिव्यक्ति मिलती है। लोकसमाज जिन भावनात्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक तत्वों से जुड़ा होता है, वे सभी किसी-न-किसी रूप में लोक साहित्य में प्रतिबिम्बित होते हैं।

विद्वानों के अनुसार लोक साहित्य लोक-प्रतिभा और लोक-अनुभवों का संचित भंडार है। इसमें नीति, शिक्षा और लोक-बुद्धि के अनेक उदाहरण मिलते हैं। साथ ही समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, विज्ञान, आयुर्वेद, प्रकृति-पर्यावरण, दर्शन, इतिहास और धर्म जैसे विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों से संबंधित अनेक संकेत और तथ्य भी लोक साहित्य में संरक्षित हैं। इस प्रकार लोकवार्ता और लोक साहित्य मिलकर लोकसमाज की सांस्कृतिक स्मृति और ज्ञान-परम्परा को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

6.4 लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतःसंबंध :

लोक-साहित्य और शिष्ट साहित्य का आपसी संबंध बहुत गहरा है। शिष्ट साहित्य ने समय-समय पर लोक-साहित्य से प्रेरणा ली है और उसकी अनेक विशेषताओं को अपनाया है। वास्तव में लोक की सहजता, स्वाभाविकता और लोकजीवन की सजीव अनुभूतियाँ शिष्ट साहित्य को अधिक जीवन्त बनाती हैं। यही कारण है कि लोक तत्वों का प्रभाव शिष्ट साहित्य में निरंतर दिखाई देता है। इसे हम निम्नलिखित रूप से स्पष्ट कर सकते हैं-

लोक-साहित्य में पशु-पक्षी बोलते और मनुष्य की तरह व्यवहार करते दिखाई देते हैं। यही विशेषता शिष्ट साहित्य में भी मिलती है। रामचरितमानसमें हनुमान, जटायु और मृग इसी प्रकार की भूमिका निभाते हैं।'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'में शकुन्तला की विदाई के समय पशु-पक्षी और जीव-जंतु मनुष्य के समान दुःख से भर उठते हैं।पद्मावतमें हीरामन तोता अतीत, वर्तमान और भविष्य की बातें बताता है। मध्यकालीन साहित्य में भी पशु-पक्षियों को मानव वाणी और आचरण से संपन्न दिखाया गया है।इसी तरह शिष्ट साहित्य में लोकोक्तियाँ और मुहावरे सीधे लोक-साहित्य से ग्रहण किए गए हैं। लोकगाथाओं और लोककथाओं में प्रचलित वे परम्परागत रूढ़ियाँ, जो कथा को गति प्रदान करती हैं, शिष्ट साहित्य में भी मौजूद हैं। शिष्ट साहित्य की भाषा को अपने शब्द-भंडार की पूर्ति के लिए लोकभाषा पर निर्भर रहना पड़ता है। छंद, अलंकार और रस का परिपाक लोक और शिष्ट - दोनों प्रकार के साहित्य में समान रूप से दिखाई देता है।जीवन की अनुभूतियों का दायरा भी दोनों में एक जैसा है। डॉ. श्रीराम शर्मा का कहना है कि "गेय मुक्तकों की परम्परा पर विचार करें, तो विद्यापति से लेकर सन्त कवियों की वाणियों और यहाँ तक की कृष्णभक्त कवियों द्वारा रचित पद्य साहित्य को दूसरे शब्दों में लोक-साहित्य भी कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। वही स्वच्छन्दता, वही आह्लाद, वही सहजता, वही लोक मानस की अकृत्रिम अनुभूति सब कुछ लोक-साहित्य जैसा ही तो है। तब शिष्ट साहित्य और लोक-साहित्य का पारस्परिक सम्बन्ध मानने में क्या आपत्ति हो सकती है!"अतः शिष्ट और लोक साहित्य के गहरे पारस्परिक संबंध को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

6.5 लोकवार्ता और लोक साहित्य :

'लोकवार्ता' के लिए अंग्रेज़ी में Folklore शब्द का प्रयोग किया जाता है। लोकवार्ता का संबंध सीधे लोकजीवन और उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं से होता है।लोकवार्ताशब्द का प्रयोग सबसे पहले डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने किया। उनके अनुसार लोकवार्ता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एकजीवन शास्त्रहै। जितना व्यापक लोक का जीवन है, उतना ही उसका लोकवार्ता में विस्तार मिलता है। लोकवार्ता का आधार तीन पहलुओं पर टिका है-

1. लोक में रहने वाले जन,
2. उस जन का भौतिक जीवन और उसकी भूमिका,
3. उस जन विशेष की संस्कृति।

इन तीनों क्षेत्रों में लोक का संपूर्ण ज्ञान समाहित होता है और लोकवार्ता का संबंध भी इन्हीं से जुड़ता है। डॉ. अग्रवाल के इस विचार ने साहित्य में एक नए प्रवाह को जन्म दिया, जिसके साथ नित्य नए अनुभव और रचनात्मक सामग्री इस साहित्यिक यज्ञ में जुड़ने लगी।डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने **'हिन्दी लोर'** का हिन्दी पर्याय **'लोकवार्ता'** माना। उन्होंने यह शब्द वैष्णव सम्प्रदाय की परंपरा से ग्रहण किया, जहाँचौरासी वैष्णवों की वार्ताऔरदो सौ बावन वैष्णवों की वार्ताजैसे ग्रंथ प्रचलित रहे हैं। यद्यपि अंग्रेजी में इसके सम्बन्ध में कहा गया है- Folklore means the traditions and facts related to a given subject like popular superstition, tales, traditions or legends. अर्थात्, 'फोक लोर' (लोकवार्ता)का आशय किसी भी विशेष विषय से जुड़ी परंपराएँ, रीति-रिवाज, लोकविश्वास, कथाएँ तथा सांस्कृतिक धरोहर या विरासत से है। प्रत्येक शब्द अपने भीतर एक विशिष्ट संस्कृति को धारण करता है और उसका वास्तविक अर्थ उसी संस्कृति की पृष्ठभूमि पर समझा जाना चाहिए। इस संदर्भ में देवेन्द्र सत्यार्थी ने भी उचित ही लिखा है- "लोकवार्ता शब्द नया नहीं है परन्तु उसका वर्तमान प्रयोग अवश्य नया है।लोकवार्ता शब्द अंग्रेजी के 'लोर' से कहीं अधिक अर्थपूर्ण है। जनता जो कुछ युग-युग से कहती और सुनती आई है अर्थात् मौखिक परम्परा की समूची सामग्री, वह सब लोकवार्ता के अन्तर्गत आ जाती है।"

गाम्बे ने हिन्दी लोर को परिभाषित करते हुए कहा है -"लोकवार्ता के अन्तर्गत वह समस्त संस्कृति आ जाती है जो 'जन' से सम्बन्ध रखती है, जो शास्त्रीय धर्म तथा इतिहास में परिणत हो गई है और जो सर्वदा अपने आप बढ़ती रही है। सभ्य समाज में इस संस्कृति का प्रतिनिधित्व परम्परा से चले आते हुए अपरिमार्जित विश्वास तथा प्रथाएँ करती हैं।"

मेक एडवर्ड लीच ने लिखा है कि "लोकवार्ता एक संज्ञानात्मक शब्द है जो किसी भी एक जातीय कृत्रिमता से विमुक्त जनसमूह के समग्र संचित ज्ञानभण्डार अर्थात् उसका

रीति-रिवाज, लोकविश्वास, लोक परम्पराओं, लोक कथाओं, जादू-टोना की क्रियाओं, लोकोक्तियों, लोक गीत इत्यादि का परिचायक है जो कि न केवल उसे साधारण भौतिक बन्धनों से परस्पर आबद्ध करता है बल्कि जिसके बीच भावात्मक एकता के सूत्र भी हैं जो उनकी हर अभिव्यंजना को न केवल अपने रंग में अनुरंजित कर लेते हैं, बल्कि उन्हें निराली और निजी विशिष्टता ही प्रदान करते हैं।"

जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि देशों में इसके जो समानार्थी शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं उनका अर्थ जनता का काव्य या जनता की परम्पराएँ होता है। रूसी भाषा में भी जनता की सर्जना को 'लोकवार्ता' कहा गया है।

स्मरणीय बिंदु-

1. लोकवार्ता मौखिक रूप में विकसित होती हैजो समाज विशेष की चेतना और सांस्कृतिक संरचना का दर्पण होती है।
2. लोकवार्ता का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक हैजिसमें लोकगीत, लोककथा, लोकविश्वास, रीति-रिवाज,जादू-टोना पारंपरिक मान्यताएँ आदि सम्मिलित होती हैं।
3. लोकसाहित्य और शिष्ट साहित्य का अटूट संबंध है,जहाँ लोकसाहित्य अपनी सहजता और जीवंतता से शिष्ट साहित्य को निरंतर प्रेरित कर उसे आधारभूमि प्रदान करता है।
4. लोकवार्ता एक प्रामाणिक सांस्कृतिक दस्तावेज हैजिसमें समाजशास्त्र, इतिहास, आयुर्वेद और दर्शन जैसे विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों के अनुभव और तथ्य सुरक्षित रहते हैं।
5. लोकवार्ता मानवीय मूल्यों की संवाहिका हैजो पीढ़ी-दर-पीढ़ी विनय, त्याग, सत्य और सामुदायिक भावना जैसे संस्कारों को संरक्षित और संप्रेषित करती है।

6.6 लोकवार्ता के तत्व :

यदिलोकवार्ताको किसी समाज या जाति विशेष का जीवन शास्त्र माना जाए, तो इसमें उस समाज का लोक-ज्ञान और पूरी सांस्कृतिक विरासत समाहित होती है। स्वाभाविक रूप से लोकवार्ता के तत्व उस समाज की रीति-रिवाजों,विश्वासों-अंधविश्वासों,परंपराओं, मान्यताओं, लोकगीतों, लोकनाट्यों, लोककथाओं, लोकगाथाओं, सामूहिक भावनाओं और व्यक्तिगत विशेषताओं से प्रभावित होते हैं। इन्हीं के आधार पर लोकवार्ता के तत्वों से उस समाज के इतिहास, मानव अवशेषों और अभिव्यक्तियों का अध्ययन करना आवश्यक होता है।

वास्तव मेंलोकवार्ता, लोक विज्ञान, लोक चर्चा और लोक वाक्यएक ही स्वरूप के भिन्न नाम हैं। इस क्षेत्र में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने लोकवार्ता के अध्ययन कोजनपदीय अध्ययनसे जोड़ा है। उनके अनुसार इसके तीन मुख्य घटक हैं-

(1) भूमि और भूमि सम्बन्धित अध्ययन

(2) भूमि पर रहने वालों का अध्ययन

(3) उसके जनजीवन और जन संस्कृति का अध्ययन ।

पहला आयाम भूमि का भौतिक अध्ययन है, जिसमें उस क्षेत्र की मिट्टी, चट्टानें, जलस्रोत जैसे झरने-नदियाँ, वृक्ष-वनस्पतियाँ, औषधीय पौधे और वहाँ पाए जाने वाले पशु-पक्षी सम्मिलित होते हैं। दूसरा आयाम उस भूमि पर बसने वाले लोगों से जुड़ा है। इसमें उनकी जातीय पहचान, रहन-सहन, सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाज, लोकगीत, नृत्य और उत्सव-मेले आदि का अध्ययन शामिल है। तीसरा आयाम उस जनसमुदाय की सभ्यता और संस्कृति है, जिसमें उनके इतिहास, जीवन-दर्शन और भाषा के सूक्ष्म विश्लेषण तक को स्थान दिया जाता है। यही तीनों आयाम मिलकर लोकवार्ता के वास्तविक तत्व और स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

डॉ. श्याम परमार के अनुसार इसके निम्नलिखित घटक हैं-

(1) लोक गीत, लोक-कथाएँ, कहावतें, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ

(2) रीति-रिवाज, त्योहार, पूजा, व्रत-अनुष्ठान

(3) जादू-टोना, टोटका, भूत-परत सम्बन्धी विश्वास

(4) लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथा

(5) बालक सम्बन्धी गीत, खेल गीत आदि

इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, लोकोक्तियाँ और पहेलियाँ जैसी मौखिक परंपराएँ आती हैं। साथ ही विभिन्न रीति-रिवाज, त्योहार, पूजा-पद्धतियाँ और व्रत-अनुष्ठान भी इसके अंग माने जाते हैं। समाज में प्रचलित जादू-टोने, टोटकों तथा भूत-प्रेत संबंधी विश्वास भी लोकवार्ता की श्रेणी में आते हैं। इसके अतिरिक्त लोकनृत्य, लोकनाट्य और लोकगाथाएँ भी इसमें सम्मिलित होती हैं। बालकों से संबंधित गीत और खेल-गीत भी लोकवार्ता का अभिन्न हिस्सा हैं।सोफियावर्न के अनुसार इसके निम्नलिखित तीन घटक हैं-

(1) लोकसाहित्य

(2) लोकजीवन के रीति-रिवाज

(3) लोकप्रचलित विश्वास

पहला घटक लोक-साहित्य है, जिसमें लोकगीत, कथाएँ, गाथाएँ और अन्य मौखिक परंपराएँ सम्मिलित होती हैं। दूसरा घटक लोकजीवन से जुड़े रीति-रिवाज हैं, जिनमें सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराएँ अभिव्यक्त होती हैं। तीसरा घटक लोक में प्रचलित विश्वास हैं, जो लोक की आस्था, धारणाओं और अनुभवों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं।

6.7 लोक साहित्य और संस्कृति :

लोकसाहित्य में विभिन्न लोक-संस्कृतियों के अवशेष सुरक्षित रहते हैं। 'संस्कृति' शब्द का आशय है- परिष्कृत करना, संशोधित करना अथवा किसी वस्तु को श्रेष्ठ बनाना। अंग्रेज़ी में इसके लिएCultureशब्द प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ है- सुधारना या उत्पन्न करना। किसी जाति या समाज के सामूहिक संस्कारों की समग्र अभिव्यक्ति को ही संस्कृति कहा जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार -"जो चीजें लोक-चित्त से सीधे उत्पन्न होकर सर्व साधारण को आन्दोलित, चालित और प्रभावित करते हैं, वे ही लोक-साहित्य, लोकशिल्प, लोक नाट्य, लोक कथानक आदि नामों से पुकारी जा सकती हैं।" दुनिया का हर मानव समुदाय और भाषा का अपना एक लोक-साहित्य होता है, जो प्रायः मौखिक रूप में ही पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है। इसका रचनाकार प्रायः अज्ञात होता है और इसकी अभिव्यक्ति सहज, स्वाभाविक तथा निरंतर परिवर्तनशील रहती है। लोक-साहित्य लोकजीवन की धड़कनों को प्रकट करता हैइसमें शिशुओं की मासूम नींद है, युवतियों की भावनाओं की लहरें हैं, विरहिणी की सिसकियाँ हैं, समाज की कुरीतियों पर प्रहार है, साथ ही लोक-मनोरंजन का रस भी है। यह समूह की वाणी है, परंतु किसी विशेष व्यक्ति के 'आप्त वचन' नहीं। लोक-साहित्य का प्रवाह बिल्कुल झरने और वायु की तरह स्वतंत्र होता है, जिसे किसी बंधन में नहीं बाँधा जा सकता। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है और शिष्ट साहित्य से इसका मौलिक अंतर भी। इसकी रचना हर जनसमूह की सामूहिक संपत्ति मानी जाती है। चाहे इसे किसी एक व्यक्ति ने रचा हो, पर यह रचना सबके लिए भाव-अभिव्यक्ति का साधन बन जाती है। लोक-साहित्य की हर धुन, लय, तुक और लहजा लोक का अपना होता है। लोक-साहित्य रचनाकाल की सहज और स्वाभाविक अवस्था का परिणाम है। इसमें साधारणीकरण के माध्यम से जहाँ रस की उत्पत्ति होती है, वहीं यह मानव मन के विकारों का परिशोधन भी करता है। अक्षर-ज्ञान के अभाव में भी जब कोई व्यक्ति अपने हृदय और कल्पना की दृष्टि से भावाविष्ट होकर रचना करता है, तो वही लोक-साहित्य कहलाता है।

संस्कृति का निर्माण परिष्कृत आचरण से होता है। जब आचरण में विकार आ जाता है, तो वह संस्कृति न रहकर रूढ़ि बन जाती है। रूढ़ियों को त्यागकर जब समाज नई, उपयोगी और प्रगतिशील बातों को अपनाता है, तभी वह संस्कृति कहलाती है। इसी संस्कृति से प्रभावित होकर व्यक्ति का निजी और सामाजिक जीवन आकार ग्रहण करता है। इससे व्यक्ति या समाज कभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता; यदि विपरीत परिस्थिति में यह प्रभाव कुछ समय के लिए दब भी जाए, तो अनुकूल वातावरण मिलते ही पुनः प्रकट हो जाता है। धर्म और संस्कृति दोनों में यही स्थायी संस्कार देखने को मिलता है। धर्म व्यापक है, क्योंकि उसका संबंध पूरे समाज से होता है, जबकि संस्कृति देश और

समाज की विशेष परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।इसी कारण लोकवार्ता (Folklore) और संस्कृति में कोई वास्तविक भेद नहीं माना जा सकता। हिन्दी मेंलोक-संस्कृतिशब्द ही 'हिन्दी लोर' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और सटीक है, क्योंकि यह शब्द व्यापक अर्थ को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है और भाषाई दोषों से भी मुक्त है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय भी लोकवार्ता और लोक-संस्कृति में कोई अंतर नहीं मानते। हिन्दी में 'लोक-संस्कृति' एक चिर-परिचित शब्द है, जिसके उच्चारण मात्र से ही जनजीवन और उसकी सांस्कृतिक झलक सामने आ जाती है। इसीलिए 'लोकवार्ता', 'लोकायन' या 'लोकयान' जैसे कृत्रिम और अपरिचित शब्दों को गढ़कर प्रचलन में लाना तर्कसंगत नहीं है। वस्तुतः हिन्दी 'लोर' और हिन्दी 'कल्चर' दोनों एक-दूसरे की सीमाओं को छूते हैं।

भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान में आयोजित अखिल भारतीय लोक संस्कृति सम्मेलन के विद्वानों ने भी अंग्रेजी के 'फोकलोर' के लिए'लोक संस्कृति'शब्द को ही उचित माना है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी यही सुझाव दिया। डॉ. उपाध्याय के अनुसार 'लोकवार्ता' शब्द ने जो भ्रम और अव्यवस्था उत्पन्न कर दी है, वह 'लोक संस्कृति' शब्द के प्रयोग से दूर हो सकती है। वास्तव में लोक-साहित्य और लोक संस्कृति को इस शब्द के माध्यम से अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है।संस्कृत मेंसंस्कृतिका अर्थ हैसम्यक् कृतिअर्थात परिष्कृत कृति। जब व्यक्ति की व्यक्तिगत कृति सामूहिक रूप धारण कर लेती है, तब वहसम्भूय कृतिबन जाती है। अज्ञेय ने भी कहा है कि जब व्यक्ति और समाज दोनों मिलकर सम्यक् कृति करते हैं, तब वही संस्कृति मनुष्य को विशिष्ट बनाती है। इस प्रकार संस्कृति शब्द व्यापक अवधारणा का द्योतक है, जिसमें धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, कला, समाज और राजनीति की सभी संस्थाएँ सम्मिलित होती हैं।परंतु जब संस्कृति के साथ*लोक*शब्द जुड़ता है, तब इसका अर्थ सीधे-सीधे लोकजीवन से जुड़ जाता है। यह उस समाज की पहचान कराता है, जो कृत्रिमता से दूर, सादगी और सरलता के साथ जीवन जीता है। जब लोक अपने गीत, वाद्य और संगीत के साथ सामूहिक रूप से अभिव्यक्ति करता है, तब वही आत्मा को प्रकाशित करने वालीलोक संस्कृतिकहलाती है।

'लोक संस्कृति' अपने भीतर गम्भीर और व्यापक अर्थ समेटे हुए हैं । इस दृष्टि से 'लोकवार्ता' की अपेक्षालोक मुखरित स्वरअधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, क्योंकि 'वार्ता' केवल एकांगी अर्थ देती है, जबकि 'मुखरित स्वर' सामूहिक और समग्र भाव को व्यक्त करता है।शिष्ट साहित्य भी जब रूखा और जीवन-विहीन लगने लगता है, तब उसे अपने मूल स्रोत अर्थात लोक संस्कृति की ओर लौटना ही पड़ता है। वास्तव में लोक संस्कृति लोक और उसके भौतिक परिवेश से उपजी हुई वह मौलिक धरोहर है, जो हर देश की असली पहचान होती है। बाबू गुलाबराय ने शिष्ट और लोक संस्कृति के संबंध पर ठीक ही कहा है कि जिस सभ्यता का आधार संस्कृति में नहीं है, वह सभ्यता वास्तव में सभ्यता नहीं है। संस्कृति की आत्मा के बिना सभ्यता का शरीर एक शव की तरह

निष्प्राण हो जाता है। केवल बाहरी साज-सज्जा, महंगे वस्त्र, बंगले और सौंदर्य प्रसाधन मनुष्य को सभ्य नहीं बना सकते। सच्ची शिष्ट संस्कृति का आधार है- विनयशीलता, त्याग, धैर्य, अस्तेय, शुचिता, इन्द्रिय-निग्रह, ज्ञान और सत्य जैसे गुण।

अपनी प्रगति जाँचे-

1. सोफियावर्न के अनुसार लोकवार्ता के तीन घटक क्या हैं?
2. संस्कृत में 'संस्कृति' का अर्थ क्या है?
3. लोकसाहित्य में लोकजीवन की क्या-क्या अभिव्यक्त होते हैं?
4. शिष्ट साहित्य क्या है?
5. शिष्ट साहित्य की भाषा कैसी होती है?

6.8 सारांश :

प्रस्तुत अध्याय में लोकवार्ता, लोक साहित्य और लोकसंस्कृति के स्वरूप, क्षेत्र, तत्व तथा पारस्परिक संबंधों का समग्र विवेचन किया गया है। भारतीय ज्ञान-परम्परा में 'लोक' शब्द केवल ग्रामीण या अशिक्षित समाज का द्योतक नहीं है, बल्कि वह जनजीवन की सामूहिक चेतना, अनुभव और सांस्कृतिक स्मृति का प्रतीक है। लोक के विश्वास, आचार-विचार, रीति-रिवाज, उत्सव, भाषा, कला और साहित्य के माध्यम से जो जीवन-दृष्टि प्रकट होती है, उसी का अध्ययन लोकवार्ता के अंतर्गत किया जाता है। लोकवार्ता एक जीवंत और गतिशील परम्परा है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप में संचरित होती रही है। इसमें लोकविश्वास, लोकाचार, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकनृत्य, लोकनाट्य, रीति-रिवाज, व्रत-अनुष्ठान, कहावतें, पहेलियाँ, जादू-टोना और लोकमान्यताएँ सम्मिलित हैं। विद्वानों के अनुसार लोकवार्ता लोकसमाज की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक संरचना का प्रामाणिक दस्तावेज है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसे जीवन-शास्त्र मानते हुए भूमि, जन और संस्कृतिइन तीन आयामों के माध्यम से इसके अध्ययन पर बल दिया है।

लोकसाहित्य लोकवार्ता का अत्यंत महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य साहित्य की दो प्रमुख धाराएँ हैं, जिनके बीच कोई कठोर विभाजन नहीं है।लोक साहित्य की सहजता, स्वाभाविकता और जीवन-सान्निध्य ने शिष्ट साहित्य को निरंतर प्रेरित किया है। लोकभाषा, लोकप्रतीक, लोकोक्तियाँ, कथानक रूढ़ियाँ और भावनात्मक अनुभूतियाँ शिष्ट साहित्य में बार-बार रूपांतरित होकर दिखाई देती हैं।

लोक साहित्य को परिनिष्ठित साहित्य की आधारभूमि कहा जा सकता है।लोकवार्ता के तत्वों में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकनृत्य, लोकनाट्य, रीति-रिवाज, त्योहार, पूजा-अनुष्ठान, लोकविश्वास, जादू-टोना, बच्चों के खेल और गीत आदि सम्मिलित हैं। ये तत्व किसी समाज के इतिहास, जीवन-दर्शन और सांस्कृतिक पहचान को समझने में सहायक होते हैं।

लोक साहित्य और संस्कृति का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। संस्कृति किसी समाज के सामूहिक संस्कारों, मूल्यों और जीवन-पद्धति की अभिव्यक्ति है।लोक साहित्य लोकजीवन की धड़कनों, भावनाओं, सामाजिक अनुभवों और नैतिक मूल्यों को सहज रूप में व्यक्त करता है। इसमें मनोरंजन के साथ-साथ नीति, शिक्षा, लोकबुद्धि और विभिन्न ज्ञान-परम्पराओं के संकेत सुरक्षित रहते हैं। लोकसंस्कृति कृत्रिमता से दूर, सादगी, सामुदायिक भावना और मानवीय मूल्यों पर आधारित होती है।लोकवार्ता, लोक साहित्य और लोकसंस्कृति एक-दूसरे से पृथक नहीं, बल्कि परस्पर अंतःसम्बद्ध हैं। ये मिलकर लोकसमाज की आत्मा, उसकी ऐतिहासिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हैं। लोकवार्ता के अध्ययन से लोकजीवन की व्यापक, बहुआयामी और जीवंत परम्परा को समग्र रूप में समझा जा सकता है।

6.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा) :

प्रश्न 1 का उत्तर: लोक-साहित्य, लोकजीवन के रीति-रिवाज और लोकप्रचलित विश्वास ।

प्रश्न 2 का उत्तर: संस्कृत में'संस्कृति'का अर्थ हैसम्यक् कृतिअर्थात परिष्कृत कृति।

प्रश्न 3 का उत्तर: लोक साहित्य में लोकजीवन की अनुभूतियाँ, सुख-दुःख, विश्वास, परंपराएँ और रीति-रिवाज अभिव्यक्त होते हैं।

प्रश्न 4 का उत्तर: शिष्ट साहित्य वह साहित्य है, जिसेपढ़े-लिखे, शिक्षित और संस्कारित वर्गने रचा है।

प्रश्न 5 का उत्तर: शिष्ट साहित्य में भाषाव्याकरणसम्मत, परिष्कृत और सुसंस्कृतहोती है।

6.10 अधिक जानने के लिए पढ़े :

1. सत्येन्द्र, डॉ. (2006). *लोक-साहित्य विज्ञान*. जोधपुर: राजस्थानी ग्रन्थागार।
2. शर्मा, डॉ. श्रीराम. (1992). *लोक-साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग*. आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
3. चारण, डॉ. सोहनदान. (2016). *राजस्थानी लोक-साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन*. जोधपुर: राजस्थानी ग्रन्थागार। ISBN 978-93-85593-11-6

4. देथा, विजयदान (संपा. एवं सम्पा.). (2003). *गीतों की फुलवाड़ी*. नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी। ISBN 978-81-260-1822-2
5. वसन्त. (2010). *संगीत विशारद*. हाथरस: संगीत कार्यालय। ISBN 81-85057-00-1
6. कल्ला, डॉ. नन्दलाल. (1997). *लोक-साहित्यशास्त्र*. वाराणसी: संजय बुक सेन्टर। ISBN 81-86135- 561
7. भानावत, डॉ. महेन्द्र.*(रंगयोग, सृजन शताब्दी लोक कला विशेषांक).*जोधपुर: राजस्थान संगीत नाटक अकादमी।
8. सत्येन्द्र. (2011). *लोक साहित्य विज्ञान*. जोधपुर: मिनर्वा पब्लिकेशन। ISBN 978-81-88757-41-1
9. ओझा, मृ. (2011). *लोककथा में लोक और लालित्य*. रायपुर: शताक्षी प्रकाशन। ISBN 978-81-89545-369
10. सांकृत्यायन, राहुल एवं उपाध्याय, कृष्णदेव (सं.). (2017 वि.).*हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास: षोडश भाग,*काशी: नागरी प्रचारिणी सभा।

6.11 अभ्यास-प्रश्न :

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :-

1. लोकवार्ता से क्या अभिप्राय है?
2. Folklore शब्द का हिन्दी पर्याय लिखिए।
3. लोकवार्ता के तीन प्रमुख आयाम कौन-से हैं?
4. लोकसाहित्य को लोकवार्ता का अभिन्न अंग क्यों कहा जाता है?
5. लोकसंस्कृति से क्या आशय है?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

1. लोकवार्ता का स्वरूप, क्षेत्र और महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के अंतःसम्बन्ध पर प्रकाश डालिए।
3. लोकवार्ता के प्रमुख तत्वों का वर्णन कीजिए।
4. लोक साहित्य और लोकसंस्कृति के संबंध को विस्तार से समझाइए।
5. लोकवार्ता को लोकसमाज की सांस्कृतिक स्मृति और ज्ञान-परम्परा का दर्पण क्यों कहा जाता है?



This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/